IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 4, October-December, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

भोजपुरी पत्रकारिता के शिल्प विधान

डॉ0 रविकान्त

भोजपुरी पत्रकारिता के शिल्प विधान भा संरचना पर संक्षेप में प्रकाश डालल उचित होई। जइसे कि पत्रकारिता अपना सूचनात्मक स्वरूप का दिसाई आज लोकतंत्र के चउथा स्तंभ मानल जा रहल बा। आम जीवन में घटित–घटना भा ओकर विवरण के प्रस्तुकरन के कार्य पत्रकारिता के क्षेत्र मानल जाला। मनुष्य शुरू से जीज्ञाशु प्रवृति के रहे, जवना वजह से ऊ हमेशा एह दिसाई प्रयत्नशील रहल। आधुनिक युग में जनसंचार एह सब तथ्यन के पूर्ती का दिसाई एगो प्रबल स्त्रोत आ घटक बनत जा रहल बा। एही कारण पत्रकारिता आज लोकप्रिय विद्या बनत जा रहल बा। समान्यत पत्रकारिता के बुनावट भा ओकर परम्परा मुख्यता कुछ विशेष तथ्यन खातिर भइल जवना में (क) सूचित कइल (ख) शिक्षित कइल (ग) मनोरंजीत (मनोरंजन) कइल। एकरा खातिर सम्पूर्ण पत्रकारिता के इतिहास खंगालल जाव त ओकरा पीछे इहे सब कारण भा प्रयोजन के प्रमुखता मिली। आज पत्रकारिता के सूचनात्मक स्वरूप का चलते पुरा संसार एक मंच पर लउकता। कहाँ का हो रहल बा के खबर पल भर आँख कान तक पहुँच जा रहल बा। पत्रकारिता का माध्यम से आज समाज में एगो मजबूत नौतिक आ वैचारिक धरातल बनल त शिक्षा आ पठन–पाठन के एगो नया मजबूत आयाम मिलला आ अंधविश्वास के दूर करे का साथे ज्ञान–विज्ञान के प्रकाश फइलल।

जनसंसार के घटक चाहे जवन रहल बाकिर पाठक, श्रोता आ दर्शक खातिर एगो नया दृष्टि मिलल। आज मनुष्य अपना दैनिक क्रिया कलापन के बोझ आ दाव पेच से ऊब पत्रकारिता कर रहल बा। इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से करे चाहे मुद्रित माध्यम दुनो के आपन विशेष मर्यादा आ परम्परा बा।

सिनेमा, सिरियल, गीत का साथे रिर्पोट, फीचर, वृतांत के सजीव प्रस्तुतिकरण के काम अगर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया करेला त कथा–कहानी, कविता संस्मरण लोक साहित्य सूचना का साथे ज्ञान–विज्ञान के जानकारी प्रिंट मीडिया से मिलेला। ''पत्रकारिता के शिल्प विधान भा बनावट पर अगर नजर डालल जाव त कुछ स्पष्टता नजर आई।

- ❖ लेखन के रूप–स्वरूप लेखन के प्रस्तुतीकरण, आत्मीक स्पर्श लेखनी शैली।
- ❖ अपेक्षा जगावल।
- ❖ ध्यानाकर्षण कइल।
- ❖ भावोतेजना
- ❖ सूचना
- ❖ विचार प्रस्तुतिकरण
- ❖ प्रतिक्रिया
- ❖ सृजना''(1)

(1) विषय वस्तु :– कवनो लेखनी का दिसाई लेखक के विषय वस्तु भा तथ्य के सोझा प्रदर्शित करे के होला। लेखन में विषय भा विचार के मूल अनुभवाधारित रहेला। मनुष्य अपना आस–पास के अवलोकन कर जवन तथ्य पावेला ओकर क्रिया–प्रतिक्रिया के आधार बना मनुष्य के कवनो घटना स्थिति पर विचार करे खातिर प्रेरित करेला। एह दिसाई लेखक बाहरी आ भीतरी सृष्टि के सच्चाई अपना लेखनी में ताना–बाना बना के बुनावट करेला। मानव मन, संसारिक विषय वस्तु भा तथ्यन के कभी ना होला। बाकिर ध्यान रहे कि चाहीं की लेखक–पत्रकार भा साहित्यकार के ओह विषय वस्तु के ध्यान में रख के सृजना करे के चाही। जवन सुचनात्मक, शैक्षिक, कल्याणकारी, मनोरंजनात्मक का साथे प्रभावी उदेश्यात्मक आ सार्थक रहो।

(2) लेखन का रूप–स्वरूप :– हर वस्तु के आपन स्वभाव रूप–स्वरूप बुनावट आ फर्मा होला। एही दिसाई कवनो लेखनी आ साहित्य में विविधता आ ओकर अनेकानेक विधा होला। अलग–अलग व्यक्ति अपना–अपना सोच–विचार का अनुसार कवनो लेखनी के अंजाम देला। केहु पद्य के प्राथमिकता देला केहु गद्य के त केहु ओकरा विद्यात्मक वाहक–कविता–कहानी, गीत, नाटक, निबंध, उपन्यास, पत्रकारिता, प्रबंधकाव्य, प्राकिर्ण, साहित्य के शिल्प पर आपन ध्यान केन्द्रित करेला।

(3) लेखन के प्रस्तुतीकरण :– कवनो व्यंजन बनावे का पहिले ओकर मीनू भा सामग्री के रूप–रेखा आ लिस्ट बनेला ओही दिसाई लेखनी के समय ओकर समस्त गुण–अवगुण आ प्रभावी तत्वन पर नजर दउरावल जाला। ओकर शुरूआत से लेके मध्य आ अंत पर फोकस कइल जाला। जवन कवनो लेखनी के सार्थक, उदेश्यात्मक, सुखात्मक आ सूचनात्मक शैली आ शिल्प के निर्धारण करेला।

(4) आत्मिक स्पर्श :– लेखनी भा कवनो सृजना में ईमानदारी महत्वपूर्ण आ आवश्यक गुण होला। तबे जाके कवनो रचना में वास्तविक

रूप–स्वरूप दिखाई देला।

(5) लेखन शैली :– विचार आ भाव के प्रस्तुतीकरण आ संयोग के शैली कहल जाला शैली खातिर कवनो विशेष फार्मूला ना होखे ऊ लेखन के व्यक्तित्व आ बुद्धिमान पर निर्भर करेला। जवना के बुनावट लेखक अपना शब्द संपदा का माध्यम से रोचक, प्रभावी, सरल, सरस आ कलात्मक बनावेला।

कवनो विषय वस्तु के आपन अलग संरचन भा बनावट होला। शिल्प विधान कथा, कहानी आ उपन्यास के अलग त काव्य संयोजन के अलग कुछ मार्क्सवादी साहित्य शास्त्री के राय इहो बा कि विषय वस्तु (Contant) स्वयं संरचना के आकार चुन लेवे ला ओह लोग के एह मान्यता का दिसाई तर्क उपलब्ध बा। बाकिर कुछ साहित्य पारखी लोग विषयवस्तु के संतुलित राखे पर बल देला त कुछ लोग विषय वस्तु के बदलत आकार आ संरचना शिल्प पर अधिक बल देला, ई लोग के मान्यता बा कि कमजोर विषय वस्तु के यदि समर्थ लेखक के दक्ष प्रतिभा चाहे इमानदार परिश्रम के लाभ मिल जाए त ऊ अपना आकरगत ढ़ाँचा के कारण महत्वपूर्ण आकृति बना सकेला। इहाँ के निष्कर्ष स्वरूप हो जाता कि कवनो विषयवस्तु के आकार अगर संतुलित आ समान होखे त रचना महत्वपूर्ण प्रतित होई

भोजपुरी पत्रकारिता के बनावट आ बुनावट

आधुनिक भोजपुरी साहित्य का विकास का साथ–साथ पत्र–पत्रिका के विकास भइल, बाकिर शुरू में ई संख्या में बहुत कम रहे। कविता–गीत लिखे के प्रवृत्ति अधिका रहे। आजादी मिलला के बाद भोजपुरी गद्य के विकास में तेजी आइल। सामान्यतः भोजपुरी के पत्र–पत्रिकन में कविता–गीत का साथ एकांकी आ कहानी प्रकाशित होखे लागल। आ बीच में भोजपुरी के पुस्तकन के प्रकाशनों प्रारंभ भइल जवना दिसाई भोजपुरी पत्रकारिता मजबूत होखे लागल। भोजपुरी पत्र–पत्रिका के विषय वस्तु, कहानी, नाटक, एकांकी का साथे लोक विषयक, समाग्री प्रकाशित होखे लागल। जवन भोजपुरी पत्रकारिता के आधारशिला बनल। आगे का सफर में भोजपुरी के कथा, कहानी, निबंध के दौड़ शुरू भइल त ओकर समीक्षात्मक आ आलोचनात्मक प्रस्तुतियो होखे लागल। पुस्तक समीक्षा के प्रस्तुति पत्र–पत्रिका के सफर आगे बढ़ावे लागल। समाग्री आ विषय वस्तु बढ़ल त पत्र–पत्रिका के संपादनो में रफ्तार आइल जवन अपना स्वर्ण काल के शुरूआत कइलस। बाकिर सच्चाई ई बा कि पूर्व आ वर्तमान दूनू समय भोजपुरी पत्र–पत्रिका के रख–रखाव आ संरक्षण के आभाव रहल। जवना दिसाई सारा पत्रिका उपलब्ध नइखे जवन उपलब्ध बा चाहे जवना के डाटा पूर्व के पुस्तक चाहे पत्र–पत्रिका में प्रकाशित बा। ओकरे के आधार बना के विवरण विश्लेषण दिहल जा रहल बा। एकरे आधार पर भोजपुरी पत्रकारिता के शिल्प विधान के विकास आ इतिहास निर्माण के स्त्रोत बनी।

भोजपुरी पत्रकारिता के इतिहास खंगलला आ विकास क्रम देखला से ई स्पष्ट हो जाता की भोजपुरी पत्रकारिता अलगा–अलग विचारधारा आ संस्था संगठन से प्रेरणा पाके अपना मुख्य आ विशेष उदेश्य का दिसाई संपादित भइल। कुछ पत्रिका अपना विशुद्ध भाषाई स्तर खातिर जानल जाला त कुछ पत्र–पत्रिका साहित्यक संरचना खातिर त कुछ भोजपुरी भाषा के आन्दोलनात्मक दशा–दिशा प्रदान करे खातिर भोजपुरी पत्रकारिता के संस्थागत प्रतिनिधित्वो पूर्ण रूप से मिलल मतलब हर भोजपुरी संस्था संगठन के आपन मुख्य पत्र–पत्रिका रहे जवना का माध्यम से भोजपुरी आन्दोलन के गतिविधि आ ओह से जुड़ल लेखक साहित्यकारण के रचना ओह में प्रकाशित होत रहल। हिन्दी (खड़ी) बोली के विद्वान भागवत शरण उपाध्याय के कथनानुसार कवनो शब्द से भाषा बनेला बाकिर शब्द भाषा ना होला। अइसही भाषा में साहित्य के रचना होला। बाकिर भाषा साहित्य ना होला। बहुत अइसन विदेशी भाषा त होला बाकिर ओह में साहित्य ना होला। बाकिर कुछ अइसन विशेष तथय होला जवन भाषा के साहित्य बना देला। मनुष्य के दुःख, दर्द, हर्ष–विषाद प्रेम परिणय वेदना–संवेदना जब कवनो भाषा में आपन जगह बनावेला त ऊ भाषा साहित्य के रूप में आवेला।

कवनो भाषा के विकास का दिसाई कुछ विशेष तत्व होला कि ओह में अधिक से अधिक साहित्य सृजना होखे एह दिसाई पत्रकारिता के अहम भूमिका मानल जा सकेला। पत्रकारिता जेतना मजबूत होई भाषाई अस्मिता के विस्तारक बनी। एह सिद्धान्त का दिसाई भोजपुरी भाषा साहित्य के समृद्ध मानल जाई। जवना में लगभग 200 से ज्यादा पत्र–पत्रिका के प्रकाशन भइल। सन् 1915 से शुरू भोजपुरी पत्रकारिता के सफर आज सतक के पार चल रहल बा। एह दिसाई भोजपुरी पत्रकारिता में हर तरह के प्रयोग आ शोध अपना पराकाष्ठा प बा त बहुत कुछ अभी शोध का दिसाई बाकि बा। हस्तलिखित भोजपुरी पत्रकारिता आज इकसवी शताब्दी में डिजिटल स्वरूप में विकशीत हो रहल बा। त एकर दू घटक प्रिंट आ इलेक्ट्रोनिक का दिसाई इलेक्ट्रानिक मीडिया आकाशवाणी आ दूरदर्शन से होत आज निजी चैनल प जइसे छा गइल होखे। आगे का सफर में भोजपुरी पत्रकारिता विद्वानन के खोज आ नया–नया माध्यम का सहारे आपन भाषाई सत्ता आ समाजिक गतिविधियन के सहजता से सम्पन्न

कर रहल बा। एह दिसाई भोजपुरी फेसबुक, वाटसाँप Youtobe, web page प आपन पैर जमा चुकल बा। अगर मोटा–मोटी बात कहल जाव त भोजपुरी आपन असमिता बचावे के लड़ाई लड़त–लड़त अपना अस्मिता के अतना मजबूत कर लेले बिया जहाँ बहुत देशी–विदेशी भाषा के पहुचे में समय लागी। बीना कवनो सरकारी सहयोग संर्वधन के ई भाषा अपना क्षेत्र विस्तार आ भाषा भाषी के संख्या का दिसाई टिकल बा। जहाँ कहीं न कही कुछ न कुछ एह भाषा के अस्तित्व बचावे का दिसाई होत रहेला। क्षेत्र विस्तार आ भूगौलिक स्थिति जाने का पहिले भोजपुरी पत्रकारिता के स्वरूप जानल जरूरी होई। ओकरा उदभव प नजर डाले के पड़ी। एकरा सन्दर्भ में नामचीन विद्वान डॉ0 भगवत शरण उपाध्याय जी अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन के तीसरका अधिवेशन 29–30 अक्टूबर 1977 के कइले रही ''शब्द से भाषा बनेला बाकिर शब्द भाषा ना होला एही तरह भाषा से साहित्य बनेला बाकिर भाषा साहित्य ना हो सके। भाषा तब साहित्य होला जब ओह में वेदना–संवेदना, हर्ष–विसाद, वेदना–संवेदना के मिश्रण भाषा के जनम देला। भाषा पहिले बोली होला जब ओह बोली में भाषी के संख्या भा क्षेत्र विस्तार का साथे ओह में साहित्य सृजना होला पत्र–पत्रिका में भिन्न–भिन्न विषय वस्तुअन प रचना आ विमर्श होला मतलब ओह में समस्त मानवीय वेदना–संवेदना के उदघटित कइल जाला तब बोली भाषा में परिणत हो जाला।''

''एही तरह भोजपुरी के पूर्वी हिन्दी के बिहारी उपबोली का रूप में स्थान मिलल जवना के लिखित प्रयोग 1789 के आस–पास मानल जाला। डॉ0 जॉर्ज ग्रियर्सन का अनुसार 1789 में एगो सिपाही के टुकरी जवन चुनार गढ़ के प्रातः कालीन भ्रमण (मार्च) करत रहे ओही टुकरी के मध्य से कुछ सैनिक निकल सामने के गली में प्रवेश कइलस लोग आ मुर्गी पकड़ वापस लौटे लागल जवना के देखत कुछ लोग भयवश चिखे–चिल्लाए लागल जवना के जबाब देत कुछ सैनिक कहल लोग ''इतना मत चिल्लाओं हम आज फिरंगी के साथ जा रहे है परन्तु हम राजा चेत सिंह के असामी है। एह वाक्य के कोट करत सबसे पहिले जॉनबिम्स 1868 में भोजपुरी शब्द के परियोग कइलन। एकरा लगभग सवा सौ साल बाद भोजपुरी पत्रकारिता के आगाज भइल। पहिले खड़ी बोली के पत्र–पत्रिका में भोजपुरी रचना आ विमर्श छपल आ ओकरा साथ आगे बढ़ल जवना दिसाई हीरा डोम के सरस्वती में छपल रचना ''अछुत के शिकायत'' जइसन सैकड़न रचना प्रकाशित भइल। भोजपुरी पत्रकारिता के अगर कालक्रम में बाटल जाव त कुछ बात अउर स्पष्ट होई।

(1) प्रारंभिक काल (स्वतंत्रता पूर्व) 1915 से 1947 ई0 तक।

(2) प्रगति काल (स्वतंत्रोत्तर काल) 1947 ई0 से 1985 ई0 तक।

(3) आधुनिक काल (प्रयोगवादी काल) 1985 से आज तक।''[2]

प्रारंभिक काल :– भोजपुरी साहित्य का साथे भोजपुरी पत्रकारिता का दिसाई ई काल शुरूआती समय रहे। ई ऊ समय रहे जहाँ भोजपुरी भाषा ह कि बोली भोजपुरी के लिपि का रहो। जइसन सवालन के लपेटा में अझुराइल रहे। मतलब मानकीकरण आ एकरूपता का साथे भाषाई दिशा–दशा के निर्धारण आ एक सूत्रता के आभाव रहे। एह दिसाई भोजपुरी पत्रकारिता खातिर संक्रमण आ संघर्ष के काल रहे। कैथी लिपि शुरूआती आधार प आ हिन्दी (खड़ी) भाषा के पत्र–पत्रिका में आपन स्थान बनावत, ब्रिटिश कालीन व्यवस्था से लड़त भिड़त आगे बढ़ल जवना दिसाई कतना पत्रिका आ संपादक के ब्रिटिशकालीन विधि व्यवस्था के बलि चढ़े के पड़ल। तब जाके भोजपुरी पत्रकारिता अपना अस्तित्व में आइल एह काल के शुरूआत ''बगसर समाचार'' पत्र से शुरू भइल। जवन 1915 में जयप्रकाश नारायण के संपादन में निकलल। जवन पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय के कथनानुसार तीन बरिस तक चलल मतलब ई पत्रिका 1918 ई0 तक प्रकाशित भइल। पहिले हस्तलिखित बाद में मुद्रित रूप में प्रकाशित भइल। जवना के शुरूआती अंक कैथी रहे बाद में जवन मुद्रित रूप में देवनागरी लिपि में संपादित होत रहे। एकरा विषय में डॉ0 विमलेश कुमार मिश्र जी अपना आलेख भोजपुरी पत्रकारिता तब आ अब जवन समकालीन भोजपुरी साहित्य के 29 अंक में प्रकाशित भइल रहे जवना में भोजपुरी के पहिला पत्र के संपादक मास्टर साहब के नाम से संपादित होखे के बात आवेला। एह पत्र का माध्यम से जनपदिय आन्दोलन जोर पकड़लस।

प्रगति काल (स्वतंत्रोत्तर काल) 1947 ई0 से 1985 ई0 तक :– ई अवधि भोजपुरी पत्रकारिता का दिसाई स्वर्णिम काल रहे। जहाँ हिन्दी–भोजपुरी के विद्वानन के द्वारा एक प एक पत्रिका संपादित भइली स। आचार्य महेन्द्र शास्त्री द्वारा 1948 ई0 में संपादित पत्रिका ''भोजपुरी'' के सफल संपादन भइल। ई पत्रिका भोजपुरी पत्रकारिता का दिसाई मील के पत्थर बनल। एह काल में भोजपुरी (द्विमासिक–1), कृषक (साप्ताहिक), भोजपुरी (मासिक), आगमन, माटी के बाली, धरती, आंतर, गाँव–घर, अंजोर, भोजपुरी समाचार, भोजपुरी वार्ता, भोजपुरी कहानियाँ, भोजपुरी साहित्य, हमार बोल, लुकार, गोहा, मासिक टाइमस, पुरवइया जागल, पहरूआ, भोजपुरी जनपद युगसंदेश, भोजपुरी समाज, हिलोर, माटी के बोली, संझवत, पहरूआ, भोजपुरी टाइम्स, टटका, ललकार, जनता ललकार, अंजोरिया, सनेश, माटी के गमक, चटक, उरेह, अहेरी, लोग, मिनसार, समाद, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, भोजपुरी संसार, डहर, डेग,

मोजर, चोट, उचार, भोजपुरी मिलाप, कलश, भोजपुरी अकादमी पत्रिका पपिहरा, पाती, लालमाटी, सनेहिया, भोजपुरी कथा–कहानी, आपन गाँव, साखी भोजपुरी समाचार डगर, झनकार, झकोर, कचनार, तरई, चाक, सोनुहुला माटी माई के बोली, दियरी, भोजपुरी परिवार कतार, कसौटी, नवनिहाल, भोजपुरी सनेश, भोजकंठ, भोजपत्र, लटर–पटर, दीया, हाल–चाल, गोपालगंज, संदेश आदि मुख्य पत्र–पत्रिका छपल रहे। एह काल में भोजपुरी पत्रकारिता प्रिंट मीडिया के खूब जलवा रहे त इलेक्ट्रॉनिक मीडिया मतलब रेडियो के ध्वनि भोजपुरिया प्रदेश में धमाल मचवले रहे। मतलब इलेक्टॉनिक मीडिया भोजपुरी पत्रकारिता के अंग बन चुकल रहे जवना दिसाई एह कालक्रम के भोजपुरी पत्रकारिता के दिसाई अतिमहत्वपूर्ण मानल जाई।

आधुनिक काल (प्रयोगवादी काल) 1985 ई0 से अभी तक :– भोजपुरी पत्रकारिता का दिसाई आधुनिक काल महत्वपूर्ण काल का रूप में बा एह कालक्रम में भोजपुरी पत्रकारिता जवन उच्चाई आ उत्कर्ष प बा ऊ सभे का सोझा बा। का प्रिंट मीडिया का इलेक्ट्रॉनिक दूनू अपना चरमोत्कर्ष आ इतिहास गढ़े के काम कइलस एह काल में भोजपुरी पत्रकारिता एक तरफ अलग–अलग प्रयोग से गुजरत इतिहास गढ़ रहल बा त दुसरा तरफ इलेक्ट्रानिक मीडिया के साधन आकाशवाणी, दूरदर्शन आ निजी चैनल का सहारे भोजपुरी साहित्य आ भोजपुरी पत्रकारिता के दशा–दिशा दिहल। आधुनिक काल पूर्ण रूप से प्रयोग प आधारित बा जवना दिसाई एह काल के प्रयोगवादी काल कहल जा सकेला। एह काल में भोजपुरी पत्रकारिता मुद्रित का साथे डिजिटल स्वरूप में आइल। एह कालक्रम के कुछ विशेष पत्र–पत्रिका में आरती, भोजपुरी भारती, कलेवा, कोइल, पनघट, हीरामन, भोजपुरी आवाज, भोजपुरी कलम, भोजपुरी लोक, पाँति–पाँति, बटोहिया, भोजपुरी परिवार, माटी के गंध, हाल–चाल, भोजपुरी आँगन, विगुल, पुरवइया, इंगुर, जगरम, कलंगी, डगर, भोजपुरी भाषा, लहर, सगुन, बटोहिया, भोजपुरी वार्ता, भोजपुरी के बोली, बायन, भोजपुरी लहर, उगेन, गमक, समकालीन, भोजपुरी साहित्य, मितवा, बयार, थाती, विभोर, अंजोरिया, कविता, फिर भी, अनुसंधान, संनेश, सुरसती, धरोहर, उड़ान, खोइछा, जनहित सपना, भोजपुरी संसार, सण्डे वाणी, महाभोजपुर, भोजपुरी विश्व, भोजपुरिया संसार, जनवाणी, भैरवी, नयका, भोजपुरी माटी, निर्मिक संदेश, आपन सनेश, पूर्वाकूर भोजपुरी पहरूआ, नवका, अंजोर, चकाचक, उदय, भिनुसार, पल संदेश, भोर, भोजपुरी वर्ल्ड, भोजपुरिया, अमन, गाँव–जवार, द सण्डे इंडियन, परास, भोजपुरी जिनगी, जनहित सपना, अंगना, माई, रचनात्मक, बातचीत, द भोजपुरी टाइम्स, परिक्षण, सिरजनहार, हाल–चाल सुक्ष–बुझ, श्री प्रभा, साखी, भोजपुरी, मशाला, आपन भोजपुरी, भोरही, भोजपुरिया, झलक, बतिया निकलल बा, भोजपुरी पंचायत, हेलो भोजपुरी, भोजपुरी संवाद, समाचार बिन्दु, भोजपुरी, पाती, गदह पुरना, लकीर, आखर, भोजपुरी साहित्य सरिता, सिरिजन संझवत, भोजपुरी जक्शन, हम भोजपुरिया, भोजपुरिया टाइम्स (दैनिक) आदि मुख्य पत्रिका बाड़ीस। जवना माध्यम से भोजपुरी पत्रकारिता साहित्य से लेके समाज तक के सम्पूर्ण विमर्श के विषय वस्तु बन चुकल बा।

भोजपुरी पत्रकारिता के स्वरूप :– भोजपुरी पत्रकारिता के शिल्प आ स्वरूप में भोजपुरी साहित्य के संरक्षण संर्वधन आ समृद्धि छुपल बा। मतलब कवनो भाषा के विकास में पत्र–पत्रिका के अहम भूमिका होला जवन ओकरा के मतबूत आ लोकप्रिय बनावेला। हर पत्रिका अपना विशेष उदेश्य, कार्य आ रचना खातिर जानल जाला। एह आधार पर पत्रकारिता के ई कईगो प्रकार से जानल जाला। साहित्यक पत्रकारिता आर्थिक पत्रकारिता, राजनैतिक पत्रकारिता, विज्ञान पत्रकारिता, कृषि पत्रकारिता, फिल्म पत्रकारिता, धार्मिक पत्रकारिता आदि। भोजपुरी में साहित्यिक पत्रकारिता के बोल बाला रहल बा। मतलब भोजपुरी पत्र–पत्रिका में देश–दुनिया के हर गतिविधि आ विमर्श के स्थान मिलल बाकिर अधिकता साहित्य के रहल, मतलब भोजपुरी पत्रकारिता के स्वरूप मुख्य रूप से साहित्यक बा ई कहल अतिस्योक्ति ना होई। भले ओकर कलेवर आ तेवर अलग–अलग हो सकेला। बाकिर उदेश्य एके रहल भोजपुरी भाषा साहित्य के तथ्य आ रचना के विमर्श आ विश्लेषण। भोजपुरी पत्रकारिता के स्वरूप का दिसाई समय–समय प एह में परिवर्तनो कइल जा रहल बा बाकिर एह से कवनो विशेष लाभ ना भइल एकरा पीछे भोजपुरी भाषी प्रदेशन के भाषी द्वारा एकरा प्रति उदाशीनता रखल जबकी दक्षिण के भाषा–भाषी अपना भाषाई सम्पर्क खातिर जानल जाला लोग। भोजपुरी में छपल पत्र–पत्रिका फ्री में बटला का बादो एह में पाठक के रूचि ना जमल जबकी अन्य भाषी पत्र–पत्रिका मंहगा रहला का बादो हाथो हाथ निकल जाला। जरूरत बा एह सब मुदन पर अध्ययन आ शोध के जवना आधार प एकरा विकाश आ प्रचार–प्रसार के प्रयास कइल जा सके। जबकि एकरा विपरीत भोजपुरी के विषय–वस्तु हिन्दी आ अंग्रेजी पत्र–पत्रिका में प्रकाशित होला त एकर महत्व बढ़ल जाला आ ऊ पाठक खातिर संग्रहनिय आ पठनीय हो जाला। भोजपुरी पत्रकारिता के घटक इलेक्ट्रॉनिक मीडिया बहुत हद तक एह भाषा साहित्य के उच्चाई तक पहुचवलस जवना दिसाई, आकाशवाणी, दूरर्दशन, निजी टेलिविजन चैनल, सोसल साइट, सोसल मीडिया, Facebook, whatsapp, Youtube आदि काफी लोकप्रिय आ सराहनीय रहल जवन समय समाज के अनूकूल मानल जा सकेला।

भोजपुरी पत्रकारिता के विद्यागत शिल्प

भोजपुरी पत्रकारिता प ग्रामिण भाव–प्रभाव के स्पष्ट रूप से देखल जा सकेला। भारत गाँव

प्रधान देश मानल जाला जहाँ गाँवन में भारतीय सम्भ्यता संस्कृति सुरक्षीत आ संरक्षीत रहल। आज दुनियाँ चाँद आ मेटा मास्क के बात कर रहल बा जबकी सुदुर गाँवन में आजो एह आधुनिक युग में आदिम युग के झझक स्पष्ट रूप से देखे के मिल जाई। जहाँ के जीवन आजो शांत–शीतल आ मिलावटपन से दुर बा। भोजपुरी के शुरूआत एही सब गाँव से शुरू भइल जवन सधुकड़ी आ संत वाणी से होत आमजन से राष्ट्रीय–अन्तरराष्ट्रीय फलक प अगुआनी कर रहल बा। भोजपुरी भाषा अन्तरराष्ट्रीय भाषा बनला का बादो कामकाजी ना बन पाइल आ ना भोजपुरी पत्रकारिता अन्तराष्ट्रीय फलक प आपन स्थाई जगह सुरक्षीत कर पाइल। एह से इहाँ स्पष्ट हो जाता की भोजपुरी पत्रकारिता प आजो आंचलिक प्रभाव प्रत्यक्ष आ पूर्णरूप से बा। जवना में आवस लिवास, रहन–सहन, वेश–भूषा, बोली–भाषा, गीत–संगीत, पर्व–त्योहार, रिति–रिवाज, व्रत–संस्कार, भूत–प्रेत, भूत–भविष्य, पेड–पौधा, विश्वास–अंधविश्वास जइसन गतिविधयन आ विषय बस्तुअन से आँचलिकता के समझल जा सकेला। एह दिसाई भोजपुरी पत्रकारिता एह विमर्शन के पत्र–पत्रिका के विषयवस्तु बनवलस। भले ओकर विद्यागत रूप अलग–अलग रहे बाकि धेय एके रहे। इहाँ कुछ आँचलिक भाव भोजपुरी पत्र में मुद्रित भइल बा। जवना से भोजपुरिया आँचलिकता के देखल जा सकेला।

संदर्भानुक्रम :–

1. हिन्दी पत्रकारिता स्वरूप आ प्रकार – महामाया सिंह पूनिया, पेज–5–7
2. भोजपुरी लोक साहित्य – डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय – विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी पेज–10

3. भोजपुरी काव्य साहित्य के इतिहास – नालंदा खुला विश्वविद्यालय, पेज–10, 11, 14, 22
4. भोजपुरी पत्रकारिता आ समकालीन साहित्य – डॉ0 वैरागी प्रभाष, पेज–36, 37
5. धरोहर – डॉ0 जौहर शफियाबादी, पेज–6
6. भोजपुरी पत्रकारिता आ समकालीन साहित्य–डॉ0 वैरागी प्रभाष, पेज–39, 58, 61
7. भोजपुरी आलोचना – डॉ0 ब्रजभूषण मिश्र, पेज 26, 28
8. सम्मेलन पत्रिका पटना – आयोजक अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन पत्रिका, पेज–16
9. भोजपुरी अकादमी पत्रिका पटना, पेज–12